alok sethi's
संडे का फंडा!

प्रथम संस्करण : सितम्बर 2016

क़ीमत : ₹ **100/-**

लेखक : **आलोक सेठी**
हिन्दुस्तान अभिकरण, पंधाना रोड, खण्डवा (म.प्र.)
tel : 0733-2223003, 2223004
cell : 094248-50000
mail : hindustanabhikaran@yahoo.co.in
web : www.aloksethi.in

प्रकाशक एवं वितरक : **रंग प्रकाशन**
33, बक्षी गली, राजबाड़ा, इन्दौर 452 004 (म.प्र.)
tel : 0731-2538787, 4068787

Visit our online book shop :
www.jainsonbookworld.com

मुद्रक : **भैया प्रिन्टर्स**, इन्दौर (म.प्र.) फोन : 0731-2421170

रूपांकन : sanjay patel productions
0 9 7 5 2 5 2 6 8 8 1

ISBN No. : 978-81-88423-72-9

©
इस पुस्तक के किसी भी अंश को बिना लेखक की अनुमति के उपयोग में लिया जा सकता है। स्रोत का उल्लेख करेंगे तो अच्छा लगेगा।

Alok Sethi's Sunday Ka Funda
by Alok Sethi

समर्पण

एक प्रश्न बार-बार आता है...
कैसे निकाल पाते हो इतना समय...?
हर बार मेरा एक ही जवाब होता है
सिर्फ़ और सिर्फ़ समर्पित और
जुझारू टीम की बदौलत।

यह पुस्तक समर्पित है
साथी दिलीप थदानी
और
हिन्दुस्तान अभिकरण, सेठी होंडा
की मेरी उस सारी टीम को
जो हमेशा कहती है...
भैया,
आप बिल्कुल भी
चिंता न कीजिएगा....
हम हैं ना...

फंडे के पीछे का फंडा

जीवन बड़ी तेज़ी से बदला है। इस बदलते दौर ने हमसे जो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ छीन ली है वह है समय। सुखद यह है कि विज्ञान ने हमसे समय तो छीन लिया, पर अनेक बेहतरीन साधन दे दिए हैं। इसमें से एक साधन को हमने अपनाया जिसका नाम है - एस.एम.एस.। लोग कहते हैं बाज़ार में नकारात्मकता का ज़ोर है। पर सकारात्मकता कौन फैलाएगा...यह भी तो हमारी ही ज़िम्मेदारी है। एक मिशन बनाया। प्रत्येक रविवार एक एस.एम.एस. तैयार कर अपनों से साझा करने का। नाम दिया - संडे का फंडा। इसे रचते समय एक चुनौती हमारे सामने आई वह थी अधिकतम 160 शब्द यानि गागर में सागर भरना। दूसरी यह कि इसे इतना सरल और सहज बनाया जाए कि बात आम आदमी के गले उतर जाए। विचार चल निकला और देखते ही देखते इसे पाने वालों की फ़ेहरिस्त दहाई से सैकड़ा, सैकड़े से हज़ार और हज़ार से बढ़कर साठ हज़ार में पहुँच गई।

पाने वालों से मिला प्रतिसाद, कल्पना से परे था। प्रभु कृपा थी छह-सात साल पहले शुरू हुआ यह सिलसिला अचूक, अखंड और निर्बाध रूप से आज तक जारी है। इस बीच अनेकों लोगों का बार-बार एक सुझाव आया। इन सारे फंडों को एक किताब में माला के रूप में पिरो दिया जाना चाहिए... आप सबका हुकुम सर आँखों पर! पूरे तो नहीं पर कुछ चुनिंदा फंडे इस पुस्तक में आपके हाथों में हैं।

इस बार भी इस सपने को साकार करने और आकार देने में श्री संजय पटेल और टीम एडराग की महती भूमिका रही। आप सभी से मिली हौसला अफ़ज़ाई हमारी ऑक्सीजन है। कुछ फंडे नाचीज़ के दिमाग़ की उपज हैं तो कुछ गुणीजनों से मिली पंक्तियाँ और लोकोक्तियाँ। सभी रचनाकारों का अंतर्मन से आभार।

आपकी तटस्थ प्रतिक्रिया का हमेशा की तरह इंतज़ार रहेगा।

आलोक सेठी

ज़िंदगी में जो मंज़िल चाहो
हासिल कर लो...
बस इतना ख़याल रखना
कि उसका रास्ता
कभी लोगों के दिलों को
तोड़ता हुआ न गुज़रता हो।

alok sethi's
संडे का फंडा!

प्रेम
बचपन में फ्री मिलता है,
जवानी में कमाना पड़ता है
और
बुढ़ापे में मांगना पड़ता है।

ज़ुबान का वज़न
बहुत कम होता है...
लेकिन
बहुत कम लोग
इसे **संभाल** पाते हैं।

ख़ुशी उन्हें नहीं मिलती
जो अपने रास्तों पर चलते हैं...
ख़ुशी तो उन्हें मिलती है
जो दूसरों की ख़ुशी के लिए
अपने रास्ते बदल लेते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

वह लोग जीवन में
सदा आगे रहते हैं...
जिन्हें ये भी समझ होती है
कि कब और कहाँ
पीछे रहना है।

बेवक़्त, बेवजह

मुस्कुरा

दिया करो...
कई दुश्मनों को यूँ ही

हरा

दिया करो।

जो ग़लत है वह ग़लत है...
चाहे उसे सारी दुनिया
कर रही हो...
जो सही है, वह सही है...
चाहे उसे आप
अकेले कर रहे हों।

alok sethi's
संडे का फंडा!

यदि कोई आप पर
आँख मूँदकर भरोसा करे..
तो आप उसे
यह अहसास कभी न दिलाएँ
कि वह अंधा है।

रोने से **आँसू** भी
पराये हो जाते हैं...
और
मुस्कुराने से
पराये भी अपने हो जाते हैं।

सुख का सबसे
बड़ा दुःख ये है कि...
उसके जाने के बाद ही
समझ आता है
कि वह सुख था।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जुगनुओं को साथ लेकर
रात रौशन कीजिए
रास्ता सूरज का देखा तो
सुबह हो जाएगी।

अगर **हारने** से
डर लगता है...
तो फिर
जीतने की इच्छा
कभी मत रखिये।

मूर्खों से तारीफ़
सुनने से बेहतर है
बुद्धिमानों से
डाँट सुनना।

alok sethi's
संडे का फंडा!

आपके पास आकर
दूसरों की बुराई करने वाला
यक़ीनन दूसरों के पास जाकर
आपकी बुराई करेगा।

न तेरा न मेरा,
हिन्दुस्तान
सबका है...
न समझी गई ये बात
तो नुकसान सबका है।

अगर कोई हमारे भोजन में
ज़हर घोल दे तो
उसका फिर भी कुछ उपचार है...
पर कानों में ज़हर घोल दे तो
उसका कोई उपचार नहीं है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

हमारी बातों से हमारे काम हों
ये ज़रूरी नहीं...
पर हमारे काम से
हमारी बातें ज़रूरी होती हैं।

कड़वा सच...

कुछ पैसे वालों का

आधा पैसा

तो ये जताने में ही
चला जाता है
कि वे पैसे वाले हैं।

अगर आप लोगों की ख़ुशियाँ
लिख सकने वाली पेंसिल
नहीं बन सकते तो
कम से कम दुःख मिटाने वाला
रबर ज़रूर बन जाइये।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अच्छा सुनने से भी
अच्छा बोलने की
आदत बनती है।

जीतने से पहले
जीत
और हारने से पहले
हार...
कभी नहीं
माननी चाहिए।

ये तो सब जानते हैं
कब क्या कहना है...
पर ये कम लोग ही जानते हैं
कब क्या नहीं कहना है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

बोलकर हर शब्द का
मातम करें...
इससे बेहतर है कि
बातें कम करें।

शब्द **मुफ़्त**
मिलते हैं...
हम उसका जैसा
इस्तेमाल करते हैं,
वैसी उसकी
क़ीमत
चुकानी पड़ती है।

दो सहारों से हमेशा बचिए...
भावनाएँ दिखाने के लिए
आँसुओं से और
गुस्सा दिखाने के लिए
शब्दों से।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जिन्हें सपने देखना
अच्छा लगता है,
उन्हें रात छोटी लगती है...
और जिन्हें सपने पूरे करना
अच्छा लगता है
उन्हें दिन छोटा।

पराजय

तब नहीं होती
जब आप गिर जाते हैं...
पराजय तो तब होती है
जब आप

उठने

से इनकार कर देते।

बड़ी बात ये नहीं कि
हम एक साल में
कितने नये दोस्त बनाते हैं...
मायने इसके हैं कि
हम कितने सालों तक
दोस्ती निभाते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अवसर चाय में डुबोए
बिस्किट की तरह होता है...
ज़रा सी देर हुई और
निकला हाथ से।

पैर में मोच और
छोटी सोच...
इंसान को कभी
आगे नहीं
बढ़ने देती।

विश्वास स्टीकर की
तरह होता है...
जो एक बार निकल जाने के बाद
दोबारा लग तो जाता है
पर पहले वाली पकड़
नहीं आ पाती।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अपनी ग़लतियों के लिए
तक़दीर को बदनाम मत करो...
क़िस्मत तो ख़ुद हिम्मत की
मोहताज होती है।

जब कभी आप
किसी के **काम**
आते हो...
यक़ीनन ख़ुदा का ही
हाथ बँटाते हो।

नए ज़माने का
बस इतना सा प्रभाव है,
पहले अभाव में ख़ुशियाँ थीं,
अब ख़ुशियों का अभाव है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

तक़दीर बदल जाती है
जब ज़िंदगी का हो कोई मक़सद...
वरना उमर कट जाती है,
तक़दीर को इल्ज़ाम देते-देते।

क़ामयाब इंसान
ख़ुश रहे या न रहे...
पर **ख़ुश** इंसान
क़ामयाब ज़रूर रहता है।

बोले हुए शब्द ऐसी चीज़ हैं
जिसकी वजह से इंसान
या तो दिल में उतर जाता है
या दिल से उतर जाता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

इंसान की सोच भी अजीब है...
क़ामयाबी मिले तो अपनी
अक़्ल पर ख़ुश होता है...
पर जब मुसीबत आए तो अपने
नसीब को कोसता है।

मौक़ा दीजिए अपने

ख़ून

को किसी की
रगों में बहने का
ये लाजवाब तरीका है

कई दिलों

में ज़िंदा रहने का।

रिश्ते चाहे कितने भी बुरे हों,
बचाए रखिएगा...
गंदा पानी भी प्यास न सही,
आग तो बुझाता ही है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

ख़ुशियाँ चंदन की तरह
होती हैं...
दूसरों के माथे पर लगाओ तो
अपनी उंगलियाँ
ख़ुद ही महक जाती हैं।

रुतबा बैंक के
बचत खाते की
तरह होता है...
जितना कम
ख़र्च करेंगे,
उतना बढ़ेगा।

वक़्त से ज़्यादा रिश्तों को
अज़ीज़ रखिए...
अच्छे इंसान
अच्छा वक़्त ला सकते हैं...
पर अच्छा वक़्त
अच्छे इंसान नहीं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

विपरीत परिस्थितियों में
व्यक्ति को उसका
प्रभाव और पैसा नहीं...
स्वभाव और संबंध बचाते हैं।

बड़ा आदमी

होना अच्छी बात है
लेकिन...
अच्छा आदमी होना
बड़ी बात है।

इंसान की बातों से
उसका वज़न पता लगता है...
पर उसकी क़ीमत उसके
काम से ही लगाई जाती है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

बेहतरीन इंसान
अमल से पहचाने जाते हैं...
वरना अच्छी बातें तो
बुरे लोग भी कर लेते हैं।

धरती पर गिरी
सिगरेट की राख
पीने वाले से बोली...
आज तेरे कारण
मेरा ये हाल हुआ है,
कल **मेरे कारण**
तेरा होगा।

क़ामयाबी के दरवाज़े भी
उन्हीं लोगों के लिए खुलते हैं,
जो उन्हें लगातार
खटखटाते रहते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

सफलता
सही समय से फैसले लेने से ही
नहीं मिलती...
बल्कि
सही फैसलों पर समय से
अमल करने से मिलती है।

ईश्वर,

अल्लाह, गॉड या वाहेगुरु
में क्या फ़र्क़ है...

वही जो माँ,

अम्मी, मॉम
और बेबे में है।

किसी की मदद करते वक़्त
उसके चेहरे की तरफ़
न देखिएगा
क्योंकि उसकी शर्मिंदा आँखें
आपके दिल में
ग़ुरूर पैदा कर सकती हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

माफ़ करो उन्हें
जिन्हें आप भूल नहीं सकते
या फिर
भूल जाओ उन्हें
जिन्हें आप माफ़ नहीं कर सकते।

जवानी में
बहाई गई
पसीने की एक बूँद
बुढ़ापे में
आँसुओं की दस बूँदों को
कम कर देती है।

अगर हारने वाला
हार के बाद भी
मुस्कुरा देता है तो...
जीतने वाले की जीत का
मज़ा किरकिरा हो ही जाता है...
ये है मुस्कुराहट की ताक़त।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दो अक्षर का लक,
ढाई अक्षर का भाग्य,
तीन अक्षर का नसीब,
साढ़े तीन अक्षर की क़िस्मत
सभी
चार अक्षर की मेहनत से छोटे ही हैं।

सामने वाला इंसान
दो तरह से देखने में ही
छोटा नज़र आता है,
एक **दूर** से
दूसरा **ग़ुरूर** से।

मंदिर, मस्जिद,
गिरजाघर ने बाँट लिया
भगवान को...
धरती बाँटी, सागर बाँटा
मत बाँटों
इंसान को।

alok sethi's
संडे का फंडा!

वह एक उंगली ज़्यादा क़ीमती है
जो दुःख में
हमारे आँसू पोंछने आती है
उन दस उंगलियों की तुलना में
जो ख़ुशी में
ताली बजाती है।

निरर्थक बहस
में कोई भी जीते...
पर संबंध हमेशा
हारते हैं।

संसार ज़रूरत के
नियम से चलता है।
सर्दियों में जिस सूरज का
इंतज़ार होता है,
उसी सूरज का गर्मियों में
तिरस्कार भी होता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

इसलिए क्यों परेशान रहें
कि ईश्वर हमारी दुआ
फ़ौरन क़बूल नहीं करता,
ये भी तो शुक्र है
कि वह हमारे गुनाहों की सज़ा
फ़ौरन नहीं देता।

कोई भी संकट
मनुष्य के **साहस** से
बड़ा नहीं...
हारा वही
जो लड़ा नहीं।

दूसरों से शिकायत न रखिए...
ख़ुद को ही बदल लीजिए...
पाँव की सुरक्षा के लिए,
चप्पल पहनना ही आसान है
धरती पर कालीन
बिछाने की तुलना में।

alok sethi's संडे का फंडा!

आदमी कहता है
लक्ष्मी आए तो मैं मुस्कुराऊँ...
लक्ष्मी कहती है
तू मुस्कुराए तो मैं आऊँ।

यदि **बिल गेट्स**
काम करना बंद कर दें और
एक करोड़ रोज़ ख़र्च करे
तो भी 735 साल तक
ख़र्च कर सकते हैं...
फिर भी वे
काम कर रहे हैं।

जल ही जीवन,
जल ही अमृत,
फिर भी क्यों न बचाते लोग।
है पड़ौस का
मटका ख़ाली,
आँगन को नहलाते लोग।।

alok sethi's संडे का फंडा!

इंसानियत ही पहला धर्म है
इंसान का...
फिर पन्ना खुलता है
गीता या क़ुरान का।

पैसा बचाना भी
पैसा कमाने की
ही एक कला है।

मृत्यु पर विजय पाने का
सबसे आसान तरीक़ा...
दूसरों के दिलों में
ज़िंदा रहना सीख लीजिए।

alok sethi's
संडे का फंडा!

पाँव फिसल जाए तो
संभलने का मौक़ा फिर भी
मिल सकता है...
पर एक बार ज़ुबान फिसल जाए तो
संभलने का कोई मौक़ा
नहीं मिलता है।

ख़ुद पर क़ाबू रखने के
दो आसान तरीक़े...

प्रशंसा

से पिघलना मत।

आलोचना

पर उबलना मत।

अक्सर ग़लत आदमी ही
आपको जीवन का
सही सबक़
देकर जाता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

हम समझते कम हैं,
समझाते ज़्यादा हैं...
इसलिए सुलझते कम हैं,
उलझते ज़्यादा हैं।

अपनों के **सुख** में
एक बार जाएँ या न जाएँ...
अगर वह **दुःख** में हैं तो
निमंत्रण
की प्रतीक्षा न करें।

धीरज एक ऐसी सवारी है
जो अपने सवार को
गिरने नहीं देती...
न किसी के क़दमों में...
और
न किसी की नज़रों में।

alok sethi's संडे का फंडा!

अच्छी आदतें
बड़ी मुश्किल से आती हैं...
बुरी आदतें उतनी ही
मुश्किल से जाती हैं।

छोटी सी
लड़ाई से
प्यार ख़त्म करने से
बेहतर है...
प्यार से
लड़ाई ख़त्म कर लें।

व्यापार में वृद्धि और
कारोबार में समृद्धि तभी होती है,
जब पैसे लेते और देते वक़्त
चेहरे की मुस्कुराहट में फ़र्क़ न हो।

alok sethi's
संडे का फंडा!

वो शख़्स जो झुक के
तुमसे मिला होगा...
यक़ीनन उसका क़द
तुमसे बड़ा होगा।

अनुमान
ग़लत हो सकते हैं...
अनुभव नहीं,
बुज़ुर्गों के तजुर्बों का
सम्मान कीजिए।

सफल होते ही आपके दोस्तों को
पता लग जाता है
आप कौन हैं...
असफल होते ही
आपको पता लग जाता है
आपके दोस्त कौन हैं?

alok sethi's
संडे का फंडा!

अक्सर वही लोग उठाते हैं
हम पर उंगलियाँ,
जिनमें हमें छूने की
ताक़त नहीं होती।

दान

देने से पहले
अपनों की मदद कीजिए...
आपके दान की ज़रूरत

भगवान

से ज़्यादा उन्हें है

ज़िंदगी तब बेहतर होती है,
जब आप ख़ुश होते हैं...
लेकिन ज़िंदगी तब
बेहतरीन होती है,
जब आपकी वजह से
लोग ख़ुश होते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

लबों पर उसके कभी
बद दुआ नहीं होती
बस एक माँ है जो कभी
ख़फ़ा नहीं होती।

अगर दूसरों का
दु:ख देखकर
आपको वाक़ई दु:ख होता है
तो समझ लीजिए
भगवान ने आपको
इन्सान बनाकर
कोई ग़लती नहीं की।

अगर आप
कुछ पाने के लिए जी रहे हैं
तो उसे वक़्त पर
हासिल करो....
क्योंकि ज़िंदगी मौक़े कम
और धोखे ज़्यादा देती है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

इंसान का हाथ ठंड में
और
दिमाग़ घमंड में
काम नहीं करता।

हमेशा **प्रेम** की
भाषा बोलिए...
इसे बहरे भी सुन सकते हैं
और गूँगे भी
समझ सकते हैं।

किसी की भी बेइज़्ज़ती
करने से हमेशा बचिए...
क्योंकि ये वह उधार हैं
जिसे हर कोई ब्याज
सहित चुकाता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

बोलना बड़ी बात नहीं...
नहीं बोलना भी
कोई बड़ी बात नहीं...
कब बोलना और
कब नहीं बोलना
यह बड़ी बात है।

ज़िंदगी एक
आइने
की तरह है...
यह तभी
मुस्कुराएगी
जब आप मुस्कुराएँगे।

तीन लोगों को
कभी मत भूलिये...
जिन्होंने मुश्किलों में साथ दिया।
जिन्होंने मुश्किलों में छोड़ दिया।
जिन्होंने मुश्किलों में डाल दिया।

alok sethi's
संडे का फंडा!

पैसा एक ही भाषा बोलता है...
अगर तुमने आज मुझे
बचा लिया तो...
कल मैं तुम्हें बचा लूँगा।

ज़िंदगी में यह
हुनर
भी आज़माना चाहिए...
भाइयों से जंग हो तो
हार
जाना चाहिए।

जिसे गुण की
पहचान नहीं है,
उसकी प्रशंसा से डरिए...
जो गुण का
जानकार है
उसके मौन से डरिए।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अगर बुरा वक़्त नहीं आएगा
तो अपने में छुपे पराये
और पराये में छुपे अपने
कैसे पहचान पाएँगे।

कुछ **अलग**
करना है तो
ज़रा भीड़ से हटकर चलो...
भीड़ साहस तो देती है
लेकिन **पहचान**
छीन लेती है।

वक़्त के साथ बदलने का
हुनर तो
हर कोई रखता है...
मज़ा तो तब है
जब वक़्त बदल जाए
पर इंसान न बदले।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दूसरों की इज़्ज़त हमेशा
इज़्ज़तदार लोग ही करते हैं...
जिनके पास ख़ुद ही
इज़्ज़त नहीं है वो भला
दूसरों को इज़्ज़त क्या देंगे।

जिनके हाथों में
लकीरें नहीं
छाले होंगे...
देखना एक दिन वही
वक़्त को
संभाले होंगे।

जब भी दुनिया
हमारे लिए एक दरवाज़ा
बंद कर देती है...
ईश्वर हमारे लिए
अनेक नई खिड़कियाँ
खोल देता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

बुराई की ख़ासियत
यह है कि
वह कभी हार नहीं मानती...
पर अच्छाई की भी
एक ख़ासियत है कि
वह कभी नहीं हारती।

सीखना

कभी न छोड़िए...
क्योंकि ज़िंदगी भी

परीक्षा

लेना नहीं छोड़ती

दौलत भी क्या चीज़ है...
आती है तो इंसान
ख़ुद को भूल जाता है...
जाती है तो ज़माना
उसको भूल जाता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दुनिया की सबसे
सस्ती चीज़ है सलाह;
एक माँगो हज़ार मिलती हैं।
सबसे मँहगी चीज़ है मदद;
हज़ारों से माँगो
एक से मिलती है।

सोच-समझ कर
बोले गए **शब्द**
ऊँची **आवाज़**
के मोहताज
नहीं होते

रिश्ते बचाने के लिए
मुलाक़ातें ज़रूरी हैं...
वरना
लगाकर भूल जाने से तो
पौधे भी सूख जाते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

पैसा और पावर
हमारी जेब में हो तो
हमारी सबसे बड़ी ताक़त है...
पर यही हमारे दिमाग़ में
आ जाए तो हमारी
सबसे बड़ी कमज़ोरी।

अगर **दोस्ती**
आपकी कमज़ोरी है...
तो आप दुनिया के सबसे
ताक़तवर इन्सान हैं

मंज़िल मिले या न मिले
ये तो मुक़द्दर की बात है...
पर कोशिश भी न करें;
ये तो ग़लत बात है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

ख़ुशियाँ बटोरते उम्र गुज़र गई...
पर ख़ुश न हो सके...
एक दिन अहसास हुआ कि
ख़ुश तो वे हैं जो
ख़ुशियाँ बाँटते रहते हैं।

दुनिया में रहने की
दो सबसे अच्छी जगह...
लोगों का **दिल**
या
उनकी **दुआ**...

रिश्तों की ख़ूबसूरती;
एक-दूसरे की कमियाँ
बर्दाश्त करने में ही है...
बिना कमी का इंसान
ढूँढेंगे तो
अकेले रह जाएँगे।

alok sethi's
संडे का फंडा!

माचिस की तीली
दूसरों को जलाने से पहले
ख़ुद जलती है...
ग़ुस्सा भी इसी तरह है...
दूसरों से पहले
हमें ख़त्म करता है।

ताक़त के साथ
नेक इरादे भी चाहिए...
वरना
ऐसा क्या था जो
रावण हार गया।

रोटी है, कपड़ा है,
मकान है
पिता छोटे परिंदे
का बड़ा आसमान है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अगर हम सफलता चाहते हैं
तो बहाने भूल जाएँ...
और
यदि हमारे पास बहाने हैं
तो सफलता भूल जाएँ।

किसी के **गुनाहों**
को तू बेनक़ाब न कर
ख़ुदा बैठा है अभी,
तू हिसाब न कर

रिश्ते बर्फ़ के गोले
की तरह होते हैं...
जिसे बनाना तो
बहुत आसान है,
मगर बनाए रखना
बहुत मुश्किल।

alok sethi's
संडे का फंडा!

शत-प्रतिशत
अच्छा आदमी ढूँढेंगे तो
शायद एक न मिलेगा...
पर अगर हर आदमी में
कुछ अच्छा ढूँढेंगे तो
हर एक में मिलेगा।

दिमाग़ पैराशूट
के समान होता है...
यह
तभी काम करता है,
जब वह **खुला** हो।

अहंकार में तीनों गए
धन, वैभव और वंश...
ना मानों तो देख लो
रावण, कौरव, कंस।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अपनी ज़ुबान से
इतने मीठे शब्द बोलो कि
अगर कभी वापस भी
लेना पड़े तो
ख़ुद को कड़वे न लगें।

किसी ने **रोज़ा** रखा,
किसी ने **उपवास** रखा,
क़ुबूल उसी का होगा...
जिसने **माँ-बाप**
को अपने पास रखा।

जो चल पड़े मंज़िल की ओर
वे तो मंज़िल पा गए...
कुछ सफ़र की मुश्किलों पर
मशवरा करते रह गए।

alok sethi's
संडे का फंडा!

किसी ने पूछा कि
रिश्तों का मतलब क्या होता है...
हमने कहा-
जहाँ मतलब हो
वहाँ रिश्ता ही कहाँ होता है?

दुनिया के लिए
आप एक **व्यक्ति** हैं
लेकिन परिवार के लिए
आप पूरी **दुनिया** हैं।
अपने परिवार के लिए आप
अपना ख़याल ज़रूर रखिए।

इस दुनिया में
अपना साया तभी
साथ चलता है
जब रौशनी हो।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दो बातें इंसान को
अपनों से दूर कर देती हैं...
एक उसका अहम
और
दूसरा उसका वहम

ज़िंदगी **ख़्वाब**
बनकर रह न जाए...
इतना **बिस्तर** से
प्यार मत करना।

हम किसी से
बेहतर करें...
इससे ज़्यादा ज़रूरी है
हम किसी के लिए
बेहतर करें।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जीवन में अनेक अवसर
जल्दी में 'ना' बोलने....
या देर से 'हाँ' बोलने में
हाथ से निकल जाते हैं।

जिसकी **ज़रूरत**
न हो वह ख़रीदोगे
तो एक दिन
जिसकी ज़रूरत है
वह **बेचना**
पड़ेगा।

बचपन की बारिश का
ज़माना भूल गए
काग़ज़ की हम
नाव चलाना भूल गए
कमरों में ऐसे बंद हुए
बारिश में नहाना भूल गए।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अजनबी पेड़ों के साये
मुहब्बत है बहुत
घर से निकलो तो
ये दुनिया ख़ूबसूरत है बहुत।

कोशिश

भी कर,
उम्मीद भी रख,
रास्ता भी चुन,
फिर उसके बाद थोड़ा

मुक़द्दर

तलाश कर।

बड़े वे नहीं
जो बड़ी-बड़ी
बातें करते हैं...
बड़े तो वे हैं
जो छोटी-छोटी बातें
भी समझते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

गर्व की वजह से
आप दूसरों से अलग दिखते हैं...
घमंड की वजह से
दूसरे आपसे अलग दिखते हैं।

ख़ुशनसीब

वे नहीं जिनका
नसीब अच्छा है...
ख़ुशनसीब वे हैं
जो अपने

नसीब

से ख़ुश हैं।

अमीर इतने बनो कि
दुनिया की हर क़ीमती चीज़
ख़रीद सको...
और क़ीमती इतने बनो कि
इस दुनिया की कोई भी अमीरी
आपको न ख़रीद सके।

alok sethi's
संडे का फंडा!

इस दुनिया में कोई भी इतना
अमीर नहीं है कि अपना
बीता हुआ कल ख़रीद सके...
पर इतना ग़रीब भी नहीं है कि
अपने आने वाले कल को
न बदल सके।

ख़ुशी

**एक ऐसी चीज़ है...
जो आपके पास नहीं
होने के बावजूद भी
आप दूसरों को
दे सकते हैं।**

मंज़िल पर ध्यान
हमने ज़रा भी अगर दिया...
चलने की धुन ने राह को
आसान कर दिया।

alok sethi's
संडे का फंडा!

वाणी का प्रभाव
अद्‌भुत होता है...
कड़वा बोलने वालों का
शहद भी नहीं बिकता
और मीठा बोलने वालों की
मिर्ची भी बिक जाती है।

**सीढ़ियाँ उन्हें मुबारक
जिन्हें छतों तक जाना है...
जिनकी मंज़िल है आसमाँ,
उन्हें अपना रास्ता
ख़ुद बनाना है।**

एक पैर से एवरेस्ट फतह करने वाली
भारत की प्रथम महिला अरुणिमा सिन्हा

विश्वास एक छोटा सा शब्द
जिसे पढ़ो तो एक सेकंड,
सोचो तो एक मिनट,
समझो तो एक दिन,
पर हासिल करने में
पूरी ज़िंदगी लग जाती है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दर्द के दिनों में चुप्पी ही
बेहतर रहती है...
आँसुओं को देखो;
कोई आवाज़ नहीं करते।

उर्दू और हिंदी में
फ़र्क़ है सिर्फ़ इतना....
ये देखती **ख़्वाब**
और वह
देखती है **सपना...**

आसमान छू लेना
सफलता नहीं है...
सफलता इसमें है कि
आसमान भी छू लिया
और
पैर भी ज़मीन पर बने रहे।

alok sethi's
संडे का फंडा!

ज़िंदगी की ख़ूबसूरती
इसमें नहीं है कि आप
कितने ख़ुश हैं,
बल्कि इसमें है कि दूसरे
आप से कितने ख़ुश हैं।

ईमानदारी

एक बेशक़ीमती
तोहफ़ा है...
हर किसी से उसकी

उम्मीद

न करें।

काग़ज़ की एक नाव
अगर पार हो गई
इसमें समुंदरों की
कहाँ हार हो गई।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अगर कोई रास्ता
भूल जाए तो उसे
शुरूआत वहीं से
करनी चाहिए
जहाँ से वो रास्ता भूला है।

सच जिसका आधार है,
परम **अहिंसा** सार
जीवन के **संग्राम** में,
वह **जीता** हर बार

यदि किसी राह में चलते हुए
आपके सामने
एक भी समस्या न आए तो
समझ लीजिएगा कि
आप
ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

मिटाने वाला रबर
उनके लिए नहीं है
जो ग़लतियाँ करते हैं,
बल्कि उनके लिए होता है
जो ग़लती मानकर
सुधार की हिम्मत रखते हैं।

जहाँ आकर मेरे अज़ीज़
मुझसे मिल नहीं सकते...
ऐसी **बुलंदी** से तो
या रब मेरी
ज़मीन ही अच्छी है।

किसी भी बड़े निर्णय से पहले
हज़ार बार सोचिये।
जब एक बार फ़ैसला
हो जाए तो
हज़ार तक़लीफ़ आने पर भी
कभी पीछे मत हटिये।

alok sethi's
संडे का फंडा!

डाली पे बैठा परिंदा
डाली की कमज़ोरी से
उसके हिलने से नहीं डरता,
क्योंकि उसे डाली पर नहीं
अपने पंखों पर विश्वास होता है।

हर बार
मुक़द्दर को
दोष देना अच्छी बात नहीं,
कभी-कभी तो हम भी
हद से
ज़्यादा माँग लेते हैं।

जीने का अंदाज़ बदल दो
आँसू भरी आवाज़ बदल दो
जो ख़्वाबों तक जा ना पाये
ऐसी हर परवाज़ बदल दो।

alok sethi's
संडे का फंडा!

उस पराजय को बुरा मत कहो,
जो हमें दु:ख पहुँचाती है,
बल्कि उस हार की क़द्र करो,
क्योंकि वही हमें
जीत का अंदाज़ सिखाती है।

लोग तो आपके रास्ते में
पत्थर फेकेंगे ही,
अब ये आप पर निर्भर है कि
आप उसे दीवार
बनाते हैं या **पुल।**

मान लो
तो हार होगी...
ठान लो
तो जीत होगी।

alok sethi's
संडे का फंडा!

ये मायने नहीं रखता कि
आपको कितनी बार
गिराया गया।
ये ज़रूर मायने रखता है कि
आप कितनी बार
उठकर खड़े हुए।

ज़िंदगी ऐसी न जियो
कि लोग
फरियाद करें,
बल्कि ऐसी जियो
की लोग
याद करें।

पत्थर की मूरत को लगते हैं
छप्पन भोग
दो रोटी के वास्ते मर जाते हैं
कई लोग।

alok sethi's
संडे का फंडा!

इंतज़ार करने वालों को
सिर्फ़ उतना ही मिलता है
जो कोशिश करने वालों द्वारा
बाक़ी छोड़ दिया जाता है।

अब तो ऐसी मुहब्बत
हमारे दरमियान हो...
तेरे घर **गीता**
और
मेरे घर **कुरआन** हो।

दुश्मन को हज़ार मौक़े दो
कि वो तुम्हारा दोस्त बन जाए,
लेकिन दोस्त को
एक भी मौक़ा मत दो कि
वो तुम्हारा दुश्मन हो जाए।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जब हम एक ही मज़ाक को लेकर
बार-बार हँस नहीं सकते तो...
एक ही ग़म लेकर
बार-बार रोते क्यों हैं?

जीवन बाँसुरी की तरह है
जिसमें बाधाओं रूपी
कितने भी छेद क्यों न हों
लेकिन
जिसे यह बजाना आ गई
उसे जीना आ गया।

राहें रौशन रहेंगी
सदा आपकी
ख़ूब ख़िदमत करो
अपने माँ-बाप की।

alok sethi's
संडे का फंडा!

ईश्वर जब
अवसर भेजता है
तो सोये हुए लोगों को
नहीं जगाता है।

चुप रहना ही
बेहतर है
ज़माने के हिसाब से दोस्तो
धोखा खा जाते हैं
अक्सर
ज़्यादा बोलने वाले।

अपने पास अच्छे जूते
नहीं होने का रोना रोने से
पहले हमें एक नज़र
उन लोगों पर भी
डाल लेना चाहिए जिनके पास
पाँव ही नहीं हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

एक होकर क़दम हम बढ़ाते रहे
चाहे लाख दुश्मन हमें बरग़लाते रहे
मस्जिदों की अज़ान
भी रहे सलामत,
मंदिरों के दीये जगमगाते रहे।

यही सोचते-सोचते
हम एक-दूसरे को
खो देंगे एक दिन...
वो मुझे याद नहीं करते
तो मैं उन्हें
क्यों याद करूँ?

सुना है लकीरें अधूरी हों तो
क़िस्मत अच्छी नहीं होती...
पर सच तो ये है कि
हाथों में दोस्तों का हाथ हो तो
लकीरों की भी ज़रूरत नहीं होती।

alok sethi's
संडे का फंडा!

मैंने कुछ इस तरह से
अपनी ज़िंदगी को आसान किया
कुछ से माफ़ी माँगी और
कुछ को माफ़ किया।

सफलता

**परछाई की तरह है;
पकड़ने जाएँगे तो
हाथ नहीं आएगी।
आप तो बस
रौशनी की ओर चलते रहिए
वह ख़ुद ब ख़ुद आपके
पीछे चली आएगी।**

ऊपरवाला जिन्हें
ख़ून के रिश्तों में बाँधना
भूल जाता है...
उन्हें आपका दोस्त बनाकर
अपनी ग़लती
सुधार लेता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दोस्त वो होता है...
जिसे आप पर तब भी
विश्वास होता है
जब आप ख़ुद पर विश्वास
खो चुके होते हैं।

मुहब्बत
वो सफ़र है
जिसे
मीलों में नहीं...
गहराई में
नापा जाता है।

बेटों की तमन्ना
कहीं पड़ जाए न भारी
राखी को तरस जाए,
कलाई न हमारी।

alok sethi's
संडे का फंडा!

हम ज़िंदगी में जितना
कम बोलते हैं...
हमारी बात उतनी ही
ज़्यादा सुनी जाती है।

जब तक
कृष्ण-सुदामा सी
दोस्ती नहीं होगी
लोग तो मिलेंगे पर
दिलों में **सच्ची ख़ुशी**
नहीं होगी

जीवन में
सफलता के लिए
तुरंत से बड़ा
कोई मंत्र नहीं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जब-जब जीवन में पाँव
लड़खड़ाए हैं...
माँ ने हिम्मतें देकर
हौसले बढ़ाए हैं।

कारनामा कर दिखाओ
और वतन की
शान
हो जाओ
अमन और नेक इरादों के
हिन्दुस्तान
हो जाओ।

इंसान ने वक़्त से पूछा-
तुम हमेशा जीत कैसे जाते हो...
वक़्त ने कहा-
मैं कभी रुकता नहीं,
मेरे साथ चलो,
कभी नहीं हारोगे।

alok sethi's संडे का फंडा!

ज़िंदगी जीने के
दो बेहतरीन रास्ते...
पहला-दिल से जियो।
दूसरा-दिल रखने के लिए जियो।

सारे साथी काम के,
सबका अपना **मोल**
जो संकट में साथ दे,
वो सबसे
अनमोल ।

कोई आहट
न सरसराहट है
ज़िंदगी सिर्फ़
मुस्कुराहट है

alok sethi's
संडे का फंडा!

रिश्ते मज़बूत करने के
दो आसान तरीक़े...
जब हम ग़लत हों, स्वीकार करें...
जब हम सही हों, शांत रहें।

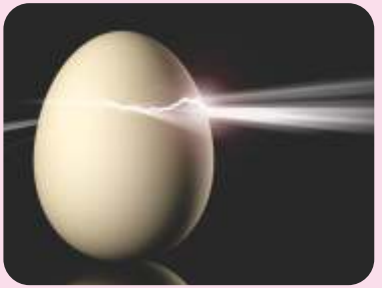

अंडा जब बाहर से फूटता है
तो मतलब जीवन
समाप्त हो जाता है।
वही अंडा जब
अंदर से फूटता है तो जीवन
प्रारंभ हो जाता है।

शक कर के बर्बाद
होने से बेहतर है
आप किसी पर
विश्वास कर के लुट जाएँ।

alok sethi's
संडे का फंडा!

विकल्प मिलेंगे बहुत
मार्ग भटकाने के लिए
संकल्प एक ही काफ़ी है
मंज़िल तक जाने के लिए

बात ज़रा सी
हमारे ध्यान में रहे
लज्जित
वही हुए जो
अभिमान
में रहे।

कोई भी काम तब तक
दिलचस्प नहीं हो सकता...
जब तक हम उसमें
दिलचस्पी नहीं लेते।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जोश और होश में फ़र्क
बस इतना सा ही तो है...
हाथ उठ जाता है तुरंत।
क़लम उठाने में
ज़माना लगता है।

गुरु समय से भी
ज़्यादा महान है...

समय तो परीक्षा
लेकर सिखाता है...

जबकि **गुरु**
पहले सिखाता है,
परीक्षा बाद में लेता है।

जो बच्चे आज
बुज़ुर्गों के पाँव छूते हैं...
कल वे ही बुलंदियों के
पड़ाव छूते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

दुनिया में सफलता का रास्ता
एकदम सीधा है...
दिक़्क़त तो उन्हें ही होती है
जिनकी चाल टेढ़ी है।

बुरी आदत

**अगर वक़्त पर न बदली जाए
तो वही आदत आदमी का**

वक़्त

बदल देती है।

जिस समय हम
बिना वजह किसी का
अपमान कर रहे होते हैं
उस समय हम
ख़ुद अपना सम्मान
कम कर रहे होते हैं

alok sethi's
संडे का फंडा!

कुछ ऐसा ही हो रहा
अब रिश्तों का विस्तार
जिससे जिसका मतलब जितना,
उससे उतरा प्यार।

निंदा उन्हीं की
होती है जो ज़िंदा हैं...
मरने पर
तारीफ़ तो
हर किसी की होती है।

दुनिया से भले ही लड़ लीजिए
क्योंकि
उनसे आपको जीतना है,
अपनों से भूलकर भी मत लड़िये
क्योंकि
उनके साथ आपको जीना है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

ज़रूरी नहीं कि लबों पर
ख़ुदा का नाम आए...
वो लम्हा भी इबादत का होता है
जब इंसान किसी के काम आए।

मुहब्बत ऐसी
ज़ुबान है प्यारे...
जिसे **गूँगा** भी
बोल सकता है।

बुलंदियों का बड़े से
बड़ा निशान छुआ
उठाया गोद में माँ ने
तब आसमान छुआ।

alok sethi's
संडे का फंडा!

लोग अच्छे विकल्प
देने पर नहीं बदलते....
वे तो तब बदलते हैं
जब कोई विकल्प नहीं होता।

काम से ही पहचान है
इंसान की....
महँगे कपड़ों का क्या...
वे तो दुकानों के
पुतले भी पहन लेते हैं।

अपने हाथों से पहाड़ काटकर रास्ता
बनाने वाला माउण्टेनमेन... दशरथ मांझी।

ख़ुद को बुरा कहने की
हिम्मत नहीं है हम में,
इसीलिए हम कहते हैं,
ज़माना ख़राब है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

न जाने क्यों यहाँ इंसा
मिल-जुलकर नहीं रहते...
वरना आजकल
किस चीज़ में
मिलावट नहीं होती।

मौक़े का फ़ायदा
मज़बूती से उठाइये;
किसी की
मजबूरी का नहीं।

पहले सोचें फिर बोलें....
बोले हुए ग़लत शब्द
माफ़ तो किये जा सकते हैं
पर भुलाए नहीं जा सकते।

alok sethi's
संडे का फंडा!

उसको ठोकर
सलाम करती है...
बाद गिरने के
जो संभल जाए।

वे दोस्त ज़िंदगी में
बहुत **मायने** रखते हैं
जो सही वक़्त पर
हमारे सामने
आइने रखते हैं।

ख़ुद की उन्नति में
इतना समय लगा दो कि
आपके पास किसी और की
निंदा का समय ही न बचे।

alok sethi's
संडे का फंडा!

सबसे ज़रूरी है हम
ख़ुद की नज़र में सही हों...
दुःखी तो ये दुनिया
भगवान से भी है।

मिठास

रिश्तों की बढ़े,
तब तो कोई बात बनती है
मिठाइयों का क्या,
वह तो हर

त्यौहार

बनती है।

कठिन समय में
समझदार आदमी
रास्ता खोजता है...
और कायर आदमी
बहाना।

alok sethi's
संडे का फंडा!

सबसे बहादुर कौन?
वो इंसान जिसके पास
बदला लेने की ताक़त तो है
फिर भी वह अपने दुश्मनों को
माफ़ कर देता है।

जो हमेशा कहते हैं,
मेरे पास **समय** नहीं...
असल में वो **व्यस्त**
नहीं होते बल्कि
अस्त-व्यस्त
होते हैं।

अवसर
बर्फ़ की तरह होता है...
ज़्यादा सोचते रहने से
पिघल जाता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अगर चाहते हो
कि ख़ुदा मिले
वह सब करो
जिससे दुआ मिले।

अहंकार
से जिस व्यक्ति का
मन मैला है
करोड़ों की भीड़ में भी
वह सदा
अकेला है।

भूलना सीखिए जनाब!
एक दिन दुनिया
आपके साथ भी
यही करने वाली है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

आपके साथ जो
मुसीबत में खड़े होते हैं
हक़ीक़त में वही लोग
बड़े होते हैं।

जो बातें भूल जाना
चाहिए थी
वो आज भी **याद** हैं...
यही हमारे संबंधों का
सबसे बड़ा **विवाद** है।

झाड़ू जब तक बंधी होती है
तो कचरा साफ़ करती है...
लेकिन जब बिखर जाती है,
ख़ुद कचरा हो जाती है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

जिस घर में पहले
बड़ों की सलाह नहीं ली जाती...
उस घर में बाद में वक़ील की
सलाह लेनी पड़ती है।

समय बहाकर ले जाता है,
नाम और निशान...
कोई **'हम'**
में रह जाता है
और कोई
'अहम' में।

चाहे गीता बाँचिये
या पढ़िये कुरआन
तेरा-मेरा प्यार ही
हर पुस्तक का ज्ञान।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अब न कोई मज़हब
न मसीहा चाहिए
बस प्यार से जीने का
सलीक़ा चाहिए।

जिन्हें अपने हाथों की
ताक़त
पर भरोसा नहीं होता...
वे हथेलियों में ही अपना
भविष्य ढूँढते हैं।

जीवन में हो या संबंधों में...
जिस धागे की गठान
खुल सकती हो,
उस पर कभी भी
कैंची मत चलाइये।

alok sethi's
संडे का फंडा!

इक तेरे इश्क़ पर
क़ुरबान मेरी ज़िंदगी...
पर 'मादर-ए-वतन'
पर मेरा इश्क़ भी कुरबान।

परखता रहा उम्र भर
ताक़त **दवाओं** की....
दंग रह गया देखकर
ताक़त **दुआओं** की।

परेशान होने वाले को तो
एक बार फिर भी
सुकून मिल जाता है...
पर परेशान करने वालों को
कभी नहीं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अपनी बात रखने का
अंदाज़ ख़ूबसूरत रखो...
ताक़ि जवाब भी
ख़ूबसूरत सुन सको।

इंसान तब
अकेला
हो जाता है...
जब **अपनों**
को छोड़ने की
सलाह **ग़ैरों** से लेता है।

ज़रूरी नहीं कि हर दिन
शुभ हो...
पर हर दिन में
कुछ न कुछ शुभ तो
ज़रूर होता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

किसी से क्षमा माँगते समय
उसे किसी बहाने से मत जोड़िए...
बहाना बनाते ही उस माफ़ी का
कोई अर्थ नहीं रह जाता।

रिश्ते और
बर्फ़ के गोले
एक समान होते हैं...
ज़रा सी गर्मी
क्या दिखाई,
ख़त्म हो जाते हैं।

ख़ुदा इंसानियत में
बसता है साहब...
लोग उसे नाहक
मज़हबों में ढूँढते हैं।

alok sethi's
संडे का फंडा!

वक़्त से शिकायतें
न कीजिए...
वह तो सबको
वक़्त देता है।

पहचान की नुमाइश
यारों कम करें...
जहाँ भी
'मैं'
लिखा है, उसे
'हम'
करें।

आकाश को कोसने से
कोई फ़ायदा नहीं...
बेहतर है कमी देख लो
अपनी उड़ान की।

alok sethi's
संडे का फंडा!

माँ के दूध ने सींचा
ज़िंदगी के पौधे को
पिता ने ज़माने की
धूप से बचाया है

जहाँ **बारिश** न हो
वहाँ **फ़सलें**
ख़राब हो जाती हैं....
और जिस घर में
संस्कार न हो,
वहाँ की **नस्लें**
ख़राब हो जाती हैं।

दूसरों की ग़लतियों से
सीखिए...
हमें इतनी बड़ी ज़िंदगी
नहीं मिली है कि
पहले सारी ग़लतियाँ ख़ुद करें,
फिर सीखें।

alok sethi's
संडे का फंडा!

सुख अपने से
कितनी दूर...
हम अपनों से
जितनी दूर।

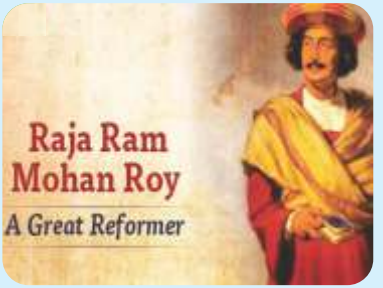

जब-जब जग
किसी पर
हँसा है...
तब-तब उसी ने
इतिहास
रचा है।

परिंदे अपने पाँव और
इंसान अपनी ज़ुबान की वजह से
जाल में फँसते हैं,
नरमी अख़्तियार करें क्योंकि...
लहजे का असर
अल्फ़ाज़ से ज़्यादा होता है।

alok sethi's
संडे का फंडा!

अपने शब्दों को
अपने मूड़ के साथ न मिलाएँ,
क्योंकि
मूड़ बदलता जाए
ये तो चल सकता है
लेकिन हमारे शब्द बदलते जाएँ
ये नहीं चल सकता है।

कम से कम
दो महिलाओं
का तो सदैव सम्मान करें...
एक वह, जिसने आपको
जन्म दिया...
दूसरी वह, जिसने आपके
लिए जन्म लिया।

जिसका दिल बड़ा
उसके दोस्त ज़्यादा...
जिसका दिमाग़ बड़ा
उसके दुश्मन ज़्यादा....

alok sethi's
संडे का फंडा!

अपने लिए जीने वाले का
मरण होता है और
दूसरों के लिए जीने वाले का
स्मरण।

जाति नहीं
होती बड़ी,
न ही बड़ा है **धर्म**
बड़ा वही है
इस जगत में जिसका
ऊँचा **कर्म** ।

alok sethi's
संडे का फंडा!

alok sethi's
सड़े का फड़ा!